(3)

GREENLAWNS HIGH SCHOOL
PRELIMINARY EXAMINATION YEAR 2018

SUBJECT : HINDI CLASS : X
TIME : 3 HOURS MARKS : 80

Answer to this paper must be written on the paper provided separately. You will not be allowed to write during the first 15 minutes. This time is to be spent in reading the question paper. The time given at the head of this paper is the time allowed for writing the answers.

This paper comprises of two section: Section A and B. Attempt all the questions from section A. Attempt any four questions from section B, answering at least one question each from the two books you have studied and any two other questions.

Section – A [40 marks]
Attempt all questions

प्र. १. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिन्दी में लगभग २५० शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए। (१५)

१) तत्काल राजनीति का आधार भ्रष्टाचार बनता जा रहा है। समाज में घटते राजनैतिक मूल्यों और भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए राजनैतिक व्यवस्था में बदलाव लाना जरुरी हो गया है। इस पर अपने विचार लिखिए।

२) स्वतंत्रता के इतने वर्षो में भारतीय नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ी है। किन्तु इस पुरुष प्रधान राष्ट्र में आज भी नारी को सामाजिक संकीर्णताओं से मुक्ति दिलाने की आवश्यकता है। इस विषय पर एक संक्षिप्त प्रस्ताव लिखिए।

3) 'वस्तु एंव सेवा कर '(GST) से आप क्या समझते हैं ? क्या यह देश के आर्थिक विकास में सहायक है ? अपना मत स्पष्ट कीजिए।

४) 'जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान' अर्थात संतोष का महत्त्व उक्ति को ध्यान में रखकर एक मौलिक कहानी लिखिए।

...2/-

५) नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा संबंध चित्र से होना चाहिए।

प्रश्न २. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर पत्र लिखिए। (७)

१) टी.वी से प्रसारित होने वाले किसी धारावाहिक की कमियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए चैनल विशेष के कार्यक्रम संचालक को पत्र लिखिए।

२) आपके मित्र का बनाया हुआ मॉडल अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान मेले के लिए चुना गया है, उसे बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

प्रश्न ३. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (१०)

उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होना चाहिए।

एक राजा संसार के सर्वोच्च धर्म की खोज में था। वह युवा से बूढ़ा हो गया। किन्तु उसकी खोज पूरी नहीं हुई। उसके पास अलग-अलग धर्मो के साधु, पंडित और दार्शनिक आते थे। वे एक –दूसरे से वाक्-युध्द करते थे। एक –दूसरे की कमियाँ निकालते तथा एक दूसरे की भ्रांति और अज्ञान को ही सिध्द करते थे। राजा के लिए धर्म ही भ्रम और अज्ञान होता जा रहा था तथा एक खेल बनता जा रहा था। जीवन के अंतिम दिन आ गए तो वह और अधिक उद्विग्न हो गया लेकिन उसे सर्वोच्च रुप से निर्दोष एवं पूर्ण धर्म न मिल सका। अंततः उसकी मृत्यु भी निकट आ गई थी।

एक दिन एक भिखारी उसके द्वार पर भीख माँगने आया। राजा को अत्यंत चिंतित, उदास और खिन्न देखकर उसने उसका कारण पूछा। राजा ने कहा, "मैं सर्वोच्च धर्म की खोज करके जीवन को धर्ममय बनाना चाहता था, लेकिन यह न हो सका और फलतः अंतिम समय में मैं बहुत दुःखी हूँ। "भिखारी ने हँसते हुए कहा, " राजन ! आपने गाड़ी के पीछे बैल बांधने चाहे। इससे ही आप दुःखी है। धर्म की खोज से जीवन धर्म नहीं

बनता। जीवन के धर्म बनने से ही धर्म की खोज होती है। इस पर भी आपने सर्वोच्च धर्म खोजना चाहा। यह तो शब्द ही असंगत सा प्रतीत होता हैं। धर्म में फिर और कुछ जोड़ने को नहीं रह जाता। वृत-वृत ही रहता है, पूर्ण वृत नहीं क्योकि वह पूर्ण नहीं। वृत का होना ही उसकी पूर्णता है। धर्म, निर्दोष, निरपेक्ष सत्य भी है और सर्वोच्च धर्म को सिध्द करने के लिए जो आपके पास आते रहे हैंवे भी या तो आपकी तरह पागल थे या फिर पाखंण्डी।

राजा ने विह्वल होकर उस भिखारी के पैर पकड़ लिए। भिखारी ने कहा, ''मेरे पैर छोड़ें। मैं तो आपके पैरों को भी मुक्त करने आया हूँ। राजधानी के बाहर नदी के पार चलें वहीं मैं धर्म की ओर इंगित करना चाहता हूँ। वे दोनों नदी के तट पर आ गए। राजधानी की श्रेष्ठतम नावें बुलाई गईं। भिखारी हर नाव में कोई न कोई दोष बता देता। अंतत: परेशान राजा ने भिखारी से कहा, ''महात्मा जी, हमें केवल एक छोटी नदी पार करनी है। इसे तैर कर भी पार किया जा सकता है, विलम्ब क्यों कर रहे हैं? ''भिखारी जैसे इसकी प्रतीक्षा में था। उसने कहा, 'राजन ! यही तो मैं कहना चाहता हूँ। धर्म ग्रन्थों की नाव के पीछे क्यों पड़े हो। क्या उचित नहीं है कि परमात्मा की ओर स्वयं ही तैरकर चलें। वस्तुत: धर्म की कोई नाव नहीं । नावों के नाम से सब मल्लाहों के व्यवसाय हैं। स्वयं तैरना ही एकमात्र मार्ग है। सत्य स्वयं ही पाया जाता है, कोई और उसे नहीं दे सकता। सागर में स्वयं ही तैरना है, कोई और सहारा नहीं है।जो सहारा खोजते हैं वे तट पर ही डूब जाते हैं और जो स्वयं तैरने का साहस करते हैं वे डूबकर भी नदी के दूसरे तट तक पहुँच जाते हैं।''

१) राजा की परेशानी का क्या कारण था? स्पष्ट करें।
२) भिक्षुक ने राजा की समस्या को किस प्रकार हल किया?
३) उसने राजा की समस्या की तुलना किससे और किस प्रकार की?
४) राजा के पास आने वाले साधु-संत, पण्डित आदि राजा को किस प्रकार भ्रम में डालते थे और क्यों?
५) अंतत: भिक्षुक ने राजा को क्या उपदेश दिया? क्या राजा उससे संतुष्ट हो सका?

प्रश्न ४. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए:-

१) निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए। (१)
क) पढ़ना ख) इतिहास

२) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए। (१)
क) कायर ख) ख्याति

३) निम्न शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए। (१)
क) मिलन ख) योगी

४) निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए:- (१)
क) घाव हरे होना
ख) पत्थर की लकीर

५) भाववाचक संज्ञा बनाइए: (१)
क) स्तब्ध ख) उलझना

६) कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए:
१) तमाम देश भर में बात फैल गई। (वाक्य शुद्ध कीजिए।) (१)
२) जो कड़वा बोलता है, उसे कोई पसन्द नहीं करता। (१)
(रेखांकित शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिए।)
३) उसने अपना हृदय टटोला और पाया कि वाकई वहाँ शांति नहीं मिली। (१)
('उसको' से वाक्य शुरु कीजिए।)

...४/-

Section B – (40 marks)

साहित्य सागर

Attempt four questions from this section. You must answer at least one question from each of the two books you have studied and any two other questions.

प्रश्न ५. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए।

अब श्यामा ने हँसकर कहा - ''तो क्या समझते हो कि मनोरमा तुमको प्यार करती है, और वह दुश्चरित्रा है? छिः राम निहाल यह तुम क्यों सोच रहे हो? देखूँ तो हाथ में कौन-सा चित्र है, क्या मनोरमा का ही?

१) श्यामा कौन है? उसे राम निहाल की किन बातों पर हँसी आयी? समझाकर लिखिए। (२)
२) श्यामा ने किन शब्दों में रामनिहाल को उलाहना दिया? अपने शब्दों में लिखिए। (२)
३) उपर्युक्त अवतरण के आधार पर रामनिहाल की स्वभावगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (३)
४) कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। (३)

प्रश्न ६. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

''पेड़ को हटाकर इसे जल्दी से निकाल लेना चाहिए।'' - माली ने सुझाव दिया। ''मुश्किल मालुम होता है।'' एक सुस्त कामचोर मोटा चपरासी बोला - ''पेड़ का तना बहुत मोटा और वजनी है।''

१) क्लर्क तथा अन्य सभी लोग क्या पेड़ को हटा पाए? कारण सहित उत्तर दीजिए। (२)
२) पेड़ को हटाने में क्या समस्या सामने आ रही थी? स्पष्ट कीजिए। (२)
३) क्या एक इतनी चिन्ताजनक समस्या के प्रति उनका यह दृष्टिकोण उचित था? अपने विचार व्यक्त कीजिए। (३)
४) 'जामुन का पेड़' कहानी हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण तथा समस्याप्रधान कहानी है। इस विषय पर अपने विचार लिखिए। (३)

प्र. ७ निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

बड़ी देर हो गयी ना। अरे क्या करूँ, बस कुछ ऐसा हो गया कि रुकना पड़ा।'' .. .. ''गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अकसर एक भिखारिन बैठा करती थी ना, लौटी तो देखा कि वहीं मरी पड़ी है।

१) वक्ता कौन है? उसे कहाँ आने में देर हो गयी और क्यों? (२)
२) 'वह' अपने आप को रोक नहीं सकी, क्यों? स्पष्ट कीजिए। (२)
३) अवतरण के आधार पर वक्ता का चरित्र –चित्रण कीजिए। (३)
४) कहानी के आधार पर इन दो कलाकारों में से किसे एक सच्ची कलाकार कहेंगे? कारण सहित बताइए। (३)

साहित्य सागर – पद्य भाग

प्रश्न ८. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखें प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए।

साँई सब संसार में मतलब का व्यवहार।
जब लग पैसा गाँठ में, तब लग ताको यार।।
तब लग ताको यार, यार संग ही संग डोले।

...५/-

पैसा रहे न पास, यार मुख से नहिं बोले।।
कह 'गिरिधर कविराय' जगत यहि लेखा भाई।
करत बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साँई।।

१) कवि के अनुसार इस संसार में किस प्रकार का व्यवहार प्रचलित है ? 'विरला' शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ? (२)
२) अपने कथन के समर्थन में कवि ने कौन-सा उदाहरण दिया है ? (२)
३) उपर्युक्त कुंडलियों में क्या सीख दी गई है ? (३)
४) शब्दार्थ लिखिए: (३)
क) संग ख) जगत ग) गाँठ
थ) बेगरजी च) लेखा घ) प्रीति

प्रश्न ९. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों मे लिखिए।

खीजत जात माखन खात।
अरुण लोचन, भौंह टेढ़ी, बार –बार जम्हात।।
कबहुँ रुनझुन चलत घुटुरन, धूर धूसर गात
कबहुँ झुक कें अलक खेंचत नैन जल भर लात।।
कबहुँ तुतरे बोल बोलत कबहुँ बोलत तात।।
'सूर' हरि की निरखि सोभा, निमिख तजत न मात।।

१) उपर्युक्त पद का प्रसंग स्पष्ट कीजिए। तथा बालक कृष्ण के रुप सौंदर्य का उल्लेख कीजिए। (२)
२) बाल कृष्ण की चेष्टाओं का वर्णन कीजिए। (२)
३) कवि की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए। (३)
४) शब्दार्थ लिखिए- (३)
क) जम्हात ख) अलक ग) तुतरे
घ) निमिख च) अरुण छ)तजत

प्रश्न १० निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

जीवन अपूर्ण लिए हुए,
पाता कभी, खोता कभी
आशा-निराशा से घिरा
हँसता कभी रोता कभी।
गति –मति न अवरुध्द,
इसका ध्यान आठों याम है।
चलना हमारा काम है।

१) कवि ने जीवन को अपूर्ण क्यों बताया है ? (२)
२) 'आशा-निराशा से घिरा' से कवि का क्या तात्पर्य है ? (२)
३) कवि मनुष्य में आठों पहर किस भावना की कामना करते हैं ? कवि के विचारों से आप कहाँ तक सहमत हैं ? (३)
४) यह किस प्रकार की कविता है ? इस कविता के द्वारा कवि हमें क्या संदेश देना चाहते हैं ? (३)